



ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उधमिका: आज के समय की जरूरत

बाबू लाल धायल*, ओम प्रकाश जीतरवाल*, केशर मल चौधरी** एवं परवीन*

*चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार, हरियाणा

**श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर, राजस्थान

कृषि उधमिका न केवल लोगों की आय बढ़ाने में सहायक है अपितु इससे ग्रामीण समुदायों का जीवन स्तर भी बेहतर होता है युवाओं की अभिलाषा को ध्यान में रखकर ही नीतियां बनाई जानी चाहिए ताकि विकास में युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। भारत गावों का देश है और इसकी आत्मा गावों में निवास करती है इसके साथ-साथ भारत युवाओं का भी देश है। ग्रामीण आबादी का बड़ा हिस्सा बेरोजगारी से जूझ रहा है। युवा पीढ़ी को कृषि उधमिका से जोड़कर बेहतर विकल्प के रूप में काम में लिया जा सकता है ताकि बेरोजगारी की समस्या से निपटा जा सके इसके साथ-साथ युवा वर्ग कौशल ज्ञान और नैतिक मूल्यों के अनुरूप होकर विकास, सामाजिक समावेशन, सहिष्णुता और शांति के प्रतिनिधि होकर काम कर सके। कृषि आधारित उद्योग तुलनात्मक रूप से कम निवेश वाले ग्रामीण परिवेश में आय बढ़ाने और रोजगार प्रदान करने वाले होते हैं कृषि आधारित कुछ उद्योगों जैसे प्रसंस्कृत खाद्य और खाद्य पदार्थों में जबरस्त निर्यात क्षमता है। विकास में युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए कृषि उधमिका आज के समय की जरूरत है। कृषि

आधारित उद्योग धंधों में कपास उद्योग, गुड़ व खांडसारी, फल व सब्जियों आधारित, आलू आधारित कृषि उद्योग, सोयाबीन आधारित, तिलहन आधारित, जूट आधारित व खाद्य संवर्धन आधारित आदि प्रमुख उद्योग हैं।

कृषि उधमिका को बढ़ावा देने के लिए अनेक सरकारी योजनाओं की शुरुआत की गई है। जिनमें प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, स्टार्टअप, डेयरी उधमिका विकास योजना, स्टैंड-अप इंडिया योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, पशुपालन अवसंरचना विकास निधि, पशुधन बीमा योजना, पीएम स्वनिधि, प्रधानमंत्री स्वरोजगार सृजन कार्यक्रम आदि प्रमुख हैं। इस दिशा में उम्मीद के मुताबिक सफलता नहीं मिल पाई है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उधमिका का विकास जरूरी है ताकि सतत आर्थिक विकास सुनिश्चित हो सके।

ग्रामीण उधमिका का महत्व-

शहरी पलायन में कमी

ग्रामीण युवाओं का सशक्तिकरण

ग्रामीण क्षेत्रों का विकास और आय में बढ़ोतरी

सीमित संसाधनों का बेहतर और प्रभावी इस्तेमाल

जीवन स्तर में सुधार

संतुलित क्षेत्रीय विकास

विदेशी मुद्रा की उपलब्धता

रोजगार के अवसर में बढ़ोतरी

ग्रामीण उधमिता क्यों जरूरी- शहरी क्षेत्रों के विपरीत ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी की दर दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। इसे छिपी हुई बेरोजगारी कहना उचित होगा ग्रामीण युवाओं का शहरी पलायन के कारण गांव खाली हो रहे हैं। ग्रामीण संसाधनों का सही तरीके से इस्तेमाल नहीं हो रहा है ग्रामीण क्षेत्रों की क्रय शक्ति भी कम हो रही है जबकि शहरी क्रय शक्ति में बढ़ोतरी हो रही है। इन कारणों के आधार पर कहा जा सकता है की ग्रामीण कृषि उधमिता को बढ़ावा देना आवश्यक है ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में पलायन और बेरोजगारी की समस्या से निपटा जा सके।



कुछ प्रमुख उधम है जिनमे अपार सम्भावनाये है-

1. मधुमक्खी पालन
2. फल, फूल व सब्जियों की खेती
3. डेयरी पालन
4. मुर्गी पालन
5. कृषि पर्यटन
6. मशरूम की खेती
7. मत्स्य पालन

1. मधुमक्खी पालन- मधुमक्खी पालन ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन युवाओं के लिए रोजगार सृजन की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में उभरा है। मधुमक्खी पालन के लिए बहुत कम कच्चे माल की जरूरत होती है। इससे शहद के रूप में बहुमूल्य पोषण भी प्राप्त होता है। शहद के अलावा इस व्यवसाय में मधुमोम, प्रोपोलिस, पराग, रॉयल जेली जैसे बहुमूल्य उत्पाद प्राप्त होते हैं। फसल परागकण के लिए मधुमक्खी कॉलोनियों को किराए पर देने से भारत में कृषि के विविधीकरण के क्षेत्र में एक नया आयाम उपलब्ध हो सकता है। इस योजना को मीठी क्रांति के नाम से जाना जाता है सरकार ने मधुमक्खी पालन संबंधी पालन हेतु 500 करोड़ रुपए का बजट प्रावधान रखा है।

जिसके अंतर्गत एकीकृत मधुमक्खी पालन विकास केन्द्रों, संग्रह, विपणन और भण्डारण केन्द्रों, पोस्ट हार्वेस्ट और मूल्य संवर्धन सुविधाओं आदि से सम्बंधित बुनियादी ढांचे का विकास करना आदि इससे 2 लाख मधुमक्खी पालकों की आय में वृद्धि होगी और उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण शहद की प्राप्ति होगी। किसानों का चयन मुख्यमंत्री लघु कुटीर उद्योग बोर्ड के माध्यम से किया जायेगा। शहद के गुणकारी लाभ जो विभिन्न बीमारियों में उपयोग किया जाता है-

1. लाल रुधिर कोशिकाओं की संख्या में बढ़ोतरी के लिए सहायक है।
2. हीमोग्लोबिन के स्तर को बढ़ाता है जिससे एनीमिया की कमी दूर होती है।

मधुमक्खी न केवल शहद पैदा करती है बल्कि फसलों की पैदावार बढ़ाकर प्रदेश एवं देश को आर्थिक पौष्टिक खाद्यान्न उपलब्ध करवाने में मदद करती है। मधुपालकों को मधुमक्खी पालन के लिए सरकार 80 प्रतिशत राशि सब्सिडी देगी व 20 प्रतिशत लाभार्थी को देनी होगी मधुमक्खी पालन ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की समस्या को दूर करने का बहुत सुनहरा स्वरोजगार है। इस व्यवसाय की खास बात यह है की यह कम पैसे में शुरू किया जा सकता है और अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। मधुमक्खी पालन की और अधिक जानकारी के लिए अपने निकटवर्ती कृषि

विज्ञान केंद्र या कृषि अधिकारी से संपर्क किया जा सकता है।

2. फल फूल एवं सब्जियों की खेती- बागवानी फसलों की खेती से रोजगार के अवसर बढ़े हैं साथ ही लघु एवं सीमांत किसानों की आय में वृद्धि हो रही है। सब्जियों अन्य फसलों की अपेक्षा प्रति इकाई क्षेत्र से कम समय में अधिक पैदावार देती है साथ ही कम समय में तैयार हो जाती है।

पतेदार सब्जियों की खेती- सब्जियों की तुड़ाई, कटाई, छाटाई, श्रेणीकरण, पैकिंग से लेकर विपणन तक के अधिकतर कार्यों में मानव श्रम की आवश्यकता अधिक होती है। जो युवा उधमियों को आय व रोजगार देने में सक्षम है। कम समय में आने वाली एवं वर्ष में कई बार उगाई जा सकने वाली फसलों जैसे धनिया, मेथी, पालक, गाजर, हरी मिर्च, बैंगन, टमाटर आदि उगाकर नजदीक मंडी में पहुंचाकर 4 से 5 लोगों को अच्छा रोजगार और अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है। इसके साथ साथ फल-फूलों व सब्जियों की छाटाई, श्रेणीकरण, पैकिंग आदि से इन उत्पादों की गुणवत्ता को बढ़ाकर अधिकतम लाभ कमाया जा सकता है। बागवानी फसलों की तकनीकी जानकारी के लिए भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान बंगलुरु, भारतीय सब्जी अनुसन्धान संस्थान वाराणसी, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड गुरुग्राम हरियाणा से प्राप्त की जा सकती है।



3. डेयरी पालन- पशुपालन एवं दुग्ध उत्पादन भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग है एवं महत्वपूर्ण योगदान अदा करता है। छोटे किसानों एवं बेरोजगार युवाओं के लिए पशुपालन एक अच्छा आय का स्रोत है। परम्परागत खेती के साथ इसे अपनाने वालों के लिए डेयरी पालन प्राकृतिक आपदाओं के विरुद्ध एक प्रकार से बीमा के रूप में कार्य करता है। साथ- साथ ही पौष्टिक एवं खाद्य सुरक्षा में भी सहायक है। आज के समय में शुद्ध दूध डेयरी उत्पाद के साथ फल एवं सब्जियां शहरी क्षेत्रों में घर-घर पहुँचाकर अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है। दूध के परिरक्षण व पैकिंग के अलावा इससे बनने वाले विभिन्न उत्पादों जैसे दूध का पाउडर, दही, छाछ, मक्खन, घी, पनीर आदि के निर्माण व विपणन में संलग्न छोटे स्तर की डेयरियों से लेकर अनेक राज्यों के दुग्ध संघों एवं राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड जैसे संस्थानों द्वारा हजारों लाखों लोगों को रोजगार प्राप्त हो रहा है। पशुपालन के विस्तार से रोजगार बढ़ने की प्रबल सम्भावनाये है। इसकी तकनीकी जानकारी व प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय डेयरी अनुसन्धान संस्थान करनाल, केंद्रीय भैस अनुसन्धान संस्थान हिसार, राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसन्धान संस्थान केंद्र बीकानेर एवं राष्ट्रीय पशु परियोजना निदेशालय हैदराबाद से सम्पर्क किया जा सकता है।

4. मुर्गी पालन- मुर्गी पालन कृषि क्षेत्र का सबसे तेजी से वृद्धि करने वाला व्यवसाय है। जिसकी वृद्धि दर प्रतिवर्ष लगभग 8 प्रतिशत है मुर्गीपालन बेरोजगारी घटाने के साथ-साथ देश की पौष्टिकता बढ़ाने का भी बेहतर विकल्प है। कुक्कुट पालन में कम जगह व कम पैसे का निवेश कर अच्छा पैसा कमाया जा सकता है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में मुर्गीपालन से अनेक फायदे हैं जैसे किसानों की आय में बढ़ोतरी, युवाओं को रोजगार देने में समर्थता, शहरों की तरफ पलायन को कम करना, देश में पोषण व खाद्य सुरक्षा की सुनिश्चिता आदि। आज के आधुनिक युवा में निरंतर बढ़ती आबादी खाद्यान्न आदतों में परिवर्तन, बढ़ती स्वास्थ्य सचेतता आदि यह तय करती है की मुर्गीपालन व्यवसाय के बढ़ने की सम्भावनाये प्रबल होती जा रही है। इसकी तकनीकी जानकारी स्थानीय कृषि विश्वविद्यालयों, मुर्गी परियोजना निदेशालय हैदराबाद, केंद्रीय पक्षी अनुसन्धान संस्थान इज्जत नगर, बरेली से सम्पर्क किया जा सकता है।

5. कृषि पर्यटन- कृषि पर्यटन का तात्पर्य पर्यटन के अनुभव के साथ-साथ कृषि से सम्बन्धित उत्पादों की जानकारी देते हुए पर्यटकों को कृषि तथा ग्रामीण स्थितियों से परिचित कराया जाता है। किसानों द्वारा उन्हें अनेक प्रकार की सुविधाएं तथा सेवाएं प्रदान की जाती हैं। कृषि स्नातक युवाओं के लिए यह आय सृजन का बेहतर विकल्प है। कृषि

पर्यटन द्वारा पर्यटकों को ग्रामीण परिवेश के बारे में शिक्षित किया जा सकता है। पर्यटकों से खेती के सन्दर्भ में कार्य करवाये जाते हैं तथा वे अपना अनुभव भी शेयर करते हैं कोई भी युवा जिसके पास कम से कम 2 हेक्टेयर भूमि जल संसाधन और पर्यटकों के मनोरंजन में रुचि रखता हो वह कृषि पर्यटन के रूप में अपना व्यवसाय शुरू कर सकता है। शहर के नजदीक कृषि पर्यटन विकसित कर पर्यटकों को ग्रामीण परिवेश की ओर आकर्षित कर सकते हैं। साथ-साथ ही ऑर्गेनिक भोजन प्रदान कर सकते हैं। इसके माध्यम से शुद्ध देशी सब्जियां शहरी घरों तक पहुंचा सकते हैं आज के बेरोजगार युवाओं के लिए यह आय का बेहतर विकल्प हो सकता है।

6. मशरूम की खेती- संतुलित भोजन में प्रोटीन महत्वपूर्ण स्थान रखता है मशरूम इसका अच्छा स्रोत माना जाता है। जिस हिसाब से मशरूम की मांग बढ़ रही है उसके अनुरूप इसका उत्पादन नहीं हो रहा है। इस प्रकार युवा व किसान मशरूम की खेती कर अच्छी आय प्राप्त कर सकते हैं। तीन प्रकार की मशरूम की खेती की जा सकती है- 1. ढींगरी मशरूम- सितम्बर से 15 नवंबर तक 2. बटन मशरूम- इसके बाद फरवरी-मार्च तक बटन मशरूम का उत्पादन ले सकते हैं 3. मिल्की मशरूम- इसके बाद मिल्की मशरूम का उत्पादन ले सकते हैं जो जून - जुलाई तक चलता है। इस प्रकार साल भर तक मशरूम का उत्पादन किया जा सकता

है। ऑयस्टर मशरूम की खेती आसान एवं सस्ती है। इसमें दूसरी मशरूम की तुलना में औषधीय गुण भी अधिक होते हैं। इसलिए विगत पाँच वर्षों में 10 गुना वृद्धि हुई है मशरूम की खेती के लिए न तो ज्यादा जमीन न ही अधिक धन की आवश्यकता होती है छप्पर के शेड में आसानी से मशरूम की खेती की जा सकती है। पौष्टिकता की दृष्टि से इसकी मांग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। मशरूम की खेती के लिए अन्य व्यवसाय के बजाय तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है ताकि खाद्य मशरूम की पहचान की जा सके। मशरूम के स्पॉन बीज की जानकारी हेतु स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय तथा राष्ट्रीय मशरूम केंद्र चम्बाघाट सोलन-173213 पर संपर्क किया जा सकता है।

7. मत्स्य पालन- भारत दुनिया का दूसरा बड़ा मछली उत्पादक देश है। पारम्परिक तरीको से छोटे-छोटे तालाबों में मछली पालन किया जा सकता है। मछली पालन में लागत की तुलना में आमदनी अधिक होती है। मछली पालन के बारे में तकनीकी जानकारी व प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय, केंद्रीय मत्स्य तकनीकी संस्थान कोचीन से संपर्क किया जा सकता है।

निष्कर्ष- खेती में बढ़ती लागत व घटते लाभ के कारण युवाओं का खेती के प्रति आकर्षण कम होता जा रहा है। ग्रामीण



क्षेत्रों के युवा शहरों की तरफ पलायन कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में कृषि उधमिका को अपनाकर नये रोजगार के अवसर सृजित कर सकते हैं। साथ-साथ ही शहरी पलायन को भी रोका जा सकता है। आज के समय में शुद्ध आर्गेनिक खाने की मांग बढ़ रही है सभी लोग अब स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो गये हैं। इसलिए ग्रामीण युवा कृषि उधमिका के

माध्यम से अनेक प्रकार के रोजगार सृजन कर जैसे कृषि पर्यटन, मुर्गीपालन, पशुपालन, मत्स्य पालन, मशरूम की खेती आदि द्वारा शहरी क्षेत्रों में शुद्ध सब्जी, फल, अनाज, अंडा आदि पहुँचाकर अधिक से अधिक आमदनी अर्जित कर सकते हैं। कृषि उधमिका आज के समय की जरूरत है ताकि ग्रामीण युवा आय के साधन जुटा सकें।